

वैदिक मन्त्र-दर्शन एवं वैज्ञानिक स्वरूप

ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ३५, मन्त्र १० का समग्र अध्ययन

प्रस्तोता: आचार्य कपिल

सम्पर्क सूत्र: 8756390767

1. मन्त्र परिचय एवं विवरण

संहिता / वेद:	ऋग्वेदसंहिता (मण्डल १, सूक्त ३५, मन्त्र १०)
ऋषि:	हिरण्यस्तूप आङ्गिरस
देवता:	सविता (सूर्य)
छन्द:	विराट् त्रिष्टुप् (चरणबद्ध वर्ण विन्यासयुक्त)

हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।

अपसेधन्त्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः ॥१०॥

2. पद-अर्थ (दोनों आचार्यों के अनुसार)

क) आचार्य सायण के अनुसार पद-अर्थ

हिरण्यहस्तः	सुवर्ण के समान किरणों रूपी हाथों वाले
असुरः	प्राणदाता / बलवान्
सुनीथः	उत्तम मार्ग दिखाने वाले नेता
सुमृळीकः	अत्यन्त सुख प्रदान करने वाले

स्ववान्	धनवान् / ऐश्वर्ययुक्त
यातु	आएं / आ गच्छेत्
अर्वाङ्	हमारी ओर / अभिमुख
अपसेधन्	भगाते हुए / दूर करते हुए
रक्षसः	राक्षसों / बाधक तत्वों को
यातुधानान्	असुरों / यातुधान नामक दुष्टों को
अस्थात्	स्थित हुए हैं / प्रकट हुए हैं
देवः	द्योतमान सूर्य देव
प्रतिदोषम्	रात्रि के समय / सायंकाल
गृणानः	स्तुति किए जाते हुए

ख) महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार पद-अर्थ

हिरण्यहस्तः	स्वर्ण के समान सर्वत्र गमनशील किरणों रूपी हाथों वाले
असुरः	प्राणों को देने वाले अथवा वायु रूप
सुनीथः	उत्तम मार्ग या ज्ञान को प्राप्त कराने वाले
सुमृच्छीकः	सबको भली-भांति सुख देने वाले
स्ववान्	उत्तम गुणों और ऐश्वर्य से युक्त
यातु	प्राप्त हो या प्राप्त करे
अर्वाङ्	सब ओर वेग से गमन करने वाला
अपसेधन्	निवारण करते हुए (रोगों या दुष्टों का)
रक्षसः	चोरों या दुष्टकर्म करने वाले उपद्रवियों को
यातुधानान्	पीड़ा पहुँचाने वाले हिंसकों और दस्यूओं को
अस्थात्	विद्यमान रहता है / अंतरिक्ष में स्थित है
देवः	सर्वव्यवहारों को सिद्ध करने वाला सूर्य
प्रतिदोषम्	प्रत्येक रात्रि या सायंकाल (सर्वदा/प्रतिदिन)
गृणानः	अपने गुणों से निरंतर स्तुति किए जाने योग्य

3. हिन्दी अनुवाद (दोनों आचार्यों के दृष्टिकोण से)

आचार्य सायण का भाष्य (पारंपरिक एवं आध्यात्मिक पक्ष):

"स्वर्णिम तेजस्वी किरणों (हाथों) वाले, प्राणस्वरूप (असुर), उत्तम नेता (सुनीथ), श्रेष्ठ सुखदाता (सुमृलीक) और ऐश्वर्यसंपन्न (स्ववान्) सूर्यदेव हमारी ओर आए। स्तोताओं द्वारा स्तुति किए जाते हुए वे देव (सविता) रात्रि या सायंकाल के समय राक्षसों और यातुधानों (दुष्टों) को दूर भगाते हुए सब जगह स्थित होते हैं।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आर्ष एवं सुधारवादी पक्ष):

"जो (हिरण्यहस्तः) सुवर्णतुल्य प्रकाशमयी किरणों रूपी हाथों से युक्त, (असुरः) प्राणों के प्रदाता या बलस्वरूप, (सुनीथः) उत्तम मार्ग दिखाने वाले, (सुमृलीकः) सबको सुख पहुँचाने वाले, (स्ववान्) श्रेष्ठ गुणों से संपन्न और (अर्वाङ्) सब ओर गति करने वाले (देवः) सूर्य देव हैं, वे (प्रतिदोषम्) निरंतर सब समयों में (गृणानः) स्तुति करने योग्य होकर (रक्षसः) दुष्टों और (यातुधानान्) पीड़ा देने वाले हिंसकों का (अपसेधन्) निवारण या नाश करते हुए (अस्थात्) अंतरिक्ष में भली-भांति स्थित रहते हैं।"

4. मन्त्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

यह मन्त्र केवल धार्मिक या दार्शनिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि भौतिकी (Physics) और जीव विज्ञान (Biology) के दृष्टिकोण से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है:

1. सौर विकिरण और प्राण ऊर्जा (Hiranyahastah & Asurah): आधुनिक विज्ञान स्वीकार करता है कि सूर्य पृथ्वी पर ऊर्जा और प्राण का एकमात्र प्रत्यक्ष स्रोत है। सूर्य की किरणें (Electromagnetic Waves) तापमान, प्रकाश और जीवन का संतुलन बनाती हैं। सायण और दयानन्द द्वारा इन्हें 'हिरण्यहस्त' (स्वर्णिम हाथ) कहना सौर ऊर्जा के प्रवाह का वैज्ञानिक चित्रण है।

2. प्राकृतिक रोगाणुनाशक और स्वास्थ्य (Apsedhan Rakshasah): मन्त्र में कहा गया है कि सूर्य 'रक्षसों' और 'यातुधानों' (हानिकारक तत्वों) का निवारण करता है। भौतिक विज्ञान की दृष्टि से सूर्य की अल्ट्रावायलेट (UV) किरणें शक्तिशाली प्राकृतिक एंटीसेप्टिक (Natural Disinfectant) हैं, जो वातावरण के रोगाणुओं को नष्ट कर पर्यावरण को स्वच्छ रखती हैं।

3. ब्रह्मांडीय संतुलन और निरंतरता (Pratidosam Asthat): पृथ्वी की घूर्णन गति से दिन-रात का चक्र चलता है, किंतु सूर्य अंतरिक्ष में अपने स्थान पर अडिग रहकर सौरमंडल को नियंत्रित रखता है। 'प्रतिदोषम् अस्थात्' मन्त्र इस शाश्वत और नियमित ब्रह्मांडीय चक्र का परिचायक है।